International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-9, Issue-5 Sep - Oct – 2022
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

सॉफ्ट पावर और अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में इसका प्रभाव

Dr. Babu Lal Meena

Professor in Pol Science S P C Govt College Ajmer

सार

भारत अपनी बौद्धिक व सांस्कृतिक ताकत (सॉफ्ट पॉवर) को तब से दुनिया के सामने पेश करता रहा है, जब राजनीतिक विशेषज्ञों ने इस धारणा का प्रतिपादन भी नहीं किया था। पिछले दशक के दौरान भारत ने कूटनीति के मामले में अपनी सॉफ्ट पॉवर का ज्यादा व्यवस्थित तरीके से इस्तेमाल किया है। वर्ष 2014 में सत्ता में आए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भारत की सॉफ्ट पॉवर का इस्तेमाल पूरी शिद्दत से करने के लिए जाने जा रहे हैं। इसके लिए वे प्रभावशाली मीडिया प्रबंधन रणनीति के साथ ही सोशल मीडिया के बेहतर उपयोग का भी सहारा ले रहे हैं। यह लेख बताता है कि इन प्रयासों से भारत की छवि विश्व समुदाय के सामने बेहतर तो हुई है लेकिन इसका फायदा दूसरे देशों से रिश्ते बेहतर करने के लिहाज से बहुत सीमित रहा है।

मुख्यशब्द सॉफ्ट पावर, अंतर्राष्ट्रीय राजनीति

परिचय

अमेरिकी राजनीति विज्ञानी जोसेफ न्ये ने 1990 में जब इस धारणा को लोकप्रिय बनाया था, उससे पहले से ही भारत की सॉफ्ट पॉवर काफी मजबूत है और उसे दुनिया के विभिन्न हिस्सों में शताब्दियों पूर्व से ही स्वीकृति मिलती रही है। लोगों ने दुनिया की प्रचानीतम सभ्यताओं में शामिल इस देश की कला और संस्कृति के बारे में जाना-समझा है। लेकिन खास तौर पर पिछले दशक के दौरान भारत ने अपनी खास तौर पर पॉवर का ज्यादा व्यवस्थित तरीके से उपयोग करना शुरू किया है (रामचंद्रन 2015)। भारत को अंतरराष्ट्रीय समुदाय के सामने पेश करने के लिए कई कदम उठाए गए हैं। इनमें 2006 में विदेश मंत्रालय के अधीन एक पब्लिक डिप्लोमेसी डिवीजन शुरू करना भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आइसीसीआर) का दुनिया भर में विस्तार, पर्यटन मंत्रालय का 'अतुल्य भारत अभियान' और प्रवासी कार्य मंत्रालय के काम-काज भी शामिल है। इन प्रयासों ने न सिर्फ भारत के सामाजिक और सांस्कृतिक पहलू को विदेशों में प्रदर्शित करने में मदद की है, बल्कि देश की अहम विदेश नीति से जुड़े प्रयासों में भी मदद की है। इनमें अफ्रीका में की गई सामरिक मदद और व्यापारिक साझेदारी भी शामिल हैं (रामचंद्रन 2015)। अब व्यापार और कारोबार का संवर्धन और उसके साथ रोजगार के अवसरों का विकास प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कूटनीतिक प्रयासों का अहम तत्व है।

यह भी सच है कि देश की छवि को बेहतर करने के लिए सरकार के तरकश में सॉफ्ट पॉवर ही एकमात्र तीर नहीं है। भ्रष्टाचार और अपराध से लड़ने जैसे दूसरे गंभीर अभियानों से भी बाहर के लोगों की नजर में भारत की छवि में बदलाव आता है और अंतरराष्ट्रीय जगत में प्रमुख ताकत के रूप में भारत कैसा होगा, इसकी लोगों को झलक मिल पाती है (अश्विनी 2016)। प्रभावशाली मीडिया प्रबंधन और सोशल मीडिया का बेहतर उपयोग प्रधानमंत्री मोदी की रणनीति का अहम हिस्सा हैं।

उद्देश्य–

1. विभिन्न देशों की विदेश नीतियों को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन ।
2. अंतरराष्ट्रीय विवादों और समस्याओं के समाधान के उपायों का अध्ययन।

सॉफ्ट पॉवर: पब्लिक डिप्लोमेसी का एक औजार

सॉफ्ट पॉवर शब्द का उपयोग उस क्षमता के लिए किया जाता है जिससे दूसरों को बिना ताकत या धमकी का इस्तेमाल किए ही कुछ करने के लिए तैयार किया जा सके (न्ये 1990)। पारंपरिक रूप से 'हार्ड पॉवर' जहां राज्य के सैन्य और आर्थिक संसाधनों पर निर्भर करती है वहीं सॉफ्ट पॉवर किसी देश के सामने अपने आकर्षण को पेश कर उसको खुद से सहमत करने की कोशिश करता है। यह किसी भी देश के तीन प्रमुख संसाधनों पर निर्भर करता है- संस्कृति, राजनीतिक मूल्य और विदेश नीति (न्ये 2004)। सॉफ्ट पॉवर मूल रूप से ऐसी चीजों पर निर्भर करता है जिसको मापा नहीं जा सकता। यानी यह दूसरे देश को अपनी अच्छी छवि पेश कर उसकी अपने बारे में सोच को बदलने से जुड़ा है (ब्लारेल २०१२-२८)। आज ज्यादातर देश सॉफ्ट पॉवर और हार्ड पॉवर को एक साथ मिला कर इस्तेमाल करते हैं जिसे 'स्मार्ट पॉवर' भी कहते हैं। साल 2014 में मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद से भारत ने भी ऐसे ही मिश्रण का इस्तेमाल करना शुरू किया है हालांकि अब भी इसमें सॉफ्ट पॉवर पर ही ज्यादा ध्यान है।

सच तो यह है कि पब्लिक डिप्लोमेसी में सॉफ्ट पॉवर ज्यादा अहम हो गयी है। विश्व राजनीति में एजेंडा तय करना और स्थिति की संरचना करना जितना महत्वपूर्ण है अतना ही महत्वपूर्ण यह भी है कि किसी खास मामले में दूसरों का रुख मोड़ सकें (न्ये 1990- 166)। सॉफ्ट पॉवर से जुड़े प्रयास उन सरकारी कूटनीतिक प्रयासों में मददगार होते हैं जिनका अंतिम मकसद अपने देश के बारे में विदेशों में जागरुकता बढ़ाना होता है। यह भारत के मामले में भी सच है। जहां तक कूटनीति का प्रश्न है प्रधानमंत्री मोदी ने पिछले दो साल के दौरान बहुत से विश्व नेताओं से मुलाकात की है (फाउंटेन- 2016)। इन मुलाकातों ने विदेशों में भारत के बारे में चर्चा को बढ़ावा दिया है। नमन जैन के मुताबिक, 'प्रधानमंत्री मोदी की पड़ोसी देशों के साथ बातचीत के मुकाबले विश्व नेताओं के साथ करिश्माई मुलाकातों ने अंतरराष्ट्रीय मीडिया में ज्यादा जगह बनाई है। इससे भारत को इस क्षेत्र में अपनी सोफ्ट पॉवर को स्थापित करने के लिहाज से रणनीतिक लाभ दिलाता है।' वे यह भी मानते हैं कि मोदी ने जिस तरह विश्व नेताओं के साथ व्यक्तिगत संबंध बनाए और कायम रखे हैं उससे न सिर्फ देशों के साथ भारत के संबंधों को प्रगाढ़ करने में मदद मिली है, बल्कि मीडिया में भारत की छवि और प्रोफाइल दोनों को बढ़ावा मिला है जिससे भारत की सॉफ्ट पॉवर को भी बढ़त मिली है।

सॉफ्ट पॉवर' का महत्त्व

- अनुनय और आकर्षण का प्रयोग कर सॉफ्ट पॉवर प्रतिस्पर्द्धा या संघर्ष के बिना अन्य राष्ट्रों के व्यवहार में परिवर्तन को संभव बनाता है।
- सॉफ्ट पॉवर की नीति के अंतर्गत विभिन्न देशों के मध्य सहयोग को बढ़ावा दिया जाता है, जिससे यह संबंधों को मजबूत कर विकास में योगदान करती है जबकि हार्ड पॉवर नीति में एक तरफा कार्रवाई, सैन्य क्षमता को बढ़ाना जैसे कदमों के कारण यह अत्यधिक महँगी, कठिन एवं चुनौतिपूर्ण हो गई है।
- 'सॉफ्ट पॉवर' में व्यापक स्तर पर अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों को प्रभावित करने की क्षमता होती है।
- प्राचीन काल में भी कौटिल्य और कामंदक जैसे विद्वानों ने राज्य के मामलों में सफलता हासिल करने के लिये 'सॉफ्ट पॉवर' के प्रयोग की वकालत की थी।

- 'हार्ड पॉवर' की अपेक्षा 'सॉफ्ट पॉवर' नीति में संसाधनों का प्रयोग लागत प्रभावी तरीके से हो सकता है। डिजिटल क्रांति के वर्तमान युग में राज्यों के बीच संपर्क एवं सद्भाव का महत्त्व बढ़ता जा रहा है, इस परिप्रेक्ष्य में 'सॉफ्ट पॉवर' रणनीतियाँ ही उचित मानी जा रही हैं।

'सॉफ्ट पॉवर' की अवधारणा

- 'सॉफ्ट पॉवर' शब्द का प्रयोग अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में किया जाता है जिसके तहत कोई राज्य परोक्ष रूप से सांस्कृतिक अथवा वैचारिक साधनों के माध्यम से किसी अन्य देश के व्यवहार अथवा हितों को प्रभावित करता है।
- इसमें आक्रामक नीतियों या मौद्रिक प्रभाव का उपयोग किये बिना अन्य राज्यों को प्रभावित करने का प्रयास किया जाता है।
- 'सॉफ्ट पॉवर' की अवधारणा का सर्वप्रथम प्रयोग अमेरिका के प्रसिद्ध राजनीतिक विशेषज्ञ जोसेफ न्ये (Juseph Nye) द्वारा किया गया था।
- जहाँ एक ओर पारंपरिक 'हार्ड पॉवर' राज्य के सैन्य और आर्थिक संसाधनों पर निर्भर करती है, वहीं 'सॉफ्ट पॉवर' अनुनय के आधार पर कार्य करती है, जिसका लक्ष्य देश के 'आकर्षण' को बढ़ाना होता है।
- 'सॉफ्ट पॉवर' ज़्यादातर अमूर्त चीजों जैसे- योग, बौद्ध धर्म, सिनेमा, संगीत, आध्यात्मिकता आदि पर आधारित होती है।
- 'सॉफ्ट पॉवर' की अवधारणा प्रस्तुत करने वाले जोसेफ न्ये के अनुसार, 'सॉफ्ट पॉवर' किसी भी देश के तीन प्रमुख संसाधनों- संस्कृति, राजनीतिक मूल्य और विदेश नीति पर निर्भर करती है।
- मौजूदा समय में अधिकांश देश 'सॉफ्ट पॉवर' और 'हार्ड पॉवर' के संयोजन का प्रयोग करते हैं, जिसे राजनीतिक विश्लेषकों ने 'स्मार्ट पॉवर' की संज्ञा दी है।

अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्ध

अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्ध विभिन्न देशों के बीच सम्बन्धों का अध्ययन है, साथ ही साथ सम्प्रभु राज्यों, अन्तर-सरकारी संगठनों, अन्तरराष्ट्रीय अ-सरकारी संगठनों, अ-सरकारी संगठनों और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की भूमिका का भी अध्ययन है। अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्ध को कभी- देवनागरीकृत : *इण्टरनेशनल स्टडीज* के रूप में भी जाना जाता है, हालाँकि दोनों शब्द पूरी तरह से पर्याय नहीं हैं।

साधारण शब्दों में 'अंतरराष्ट्रीय राजनीति' का अर्थ है 'राज्यों के मध्य राजनीति करना'। यदि 'राजनीति' के अर्थ का अध्ययन करें तो तीन प्रमुख तत्त्व सामने आते हैं - (क) समूहों का अस्तित्व; (ख) समूहों के बीच ; तथा (ग) समूहों द्वारा अपने हितों की पूर्ति। इस आशय को यदि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आकलन करें तो ये तीन तत्त्व मुख्य रूप से - (1) राज्यों का अस्तित्व; (2) राज्यों के बीच संघर्ष; तथा (3) अपने राष्ट्रहितों की पूर्ति हेतु शक्ति का प्रयोग आते हैं। अतः अंतरराष्ट्रीय राजनीति उन क्रियाओं का अध्ययन करना है जिसके अंतर्गत राज्य अपने राष्ट्र हितों की पूर्ति हेतु शक्ति के आधार पर संघर्षरत रहते हैं। इस सन्दर्भ में राष्ट्रीय हित अंतरराष्ट्रीय राजनीति के प्रमुख लक्ष्य होते हैं; संघर्ष इसका दिशा निर्देश तय करती है; तथा शक्ति इस उद्देश्य प्राप्ति का प्रमुख साधन माना जाता है।

परन्तु उपर्युक्त परिभाषा को हम परम्परागत मान सकते हैं, क्योंकि आज 'अंतरराष्ट्रीय राजनीति' का स्थान इससे व्यापक अवधारणा '**अंतरराष्ट्रीय संबंधों**' ने ले लिया है। इसके अंतर्गत राज्यों के परस्पर संघर्ष के साथ-साथ सहयोगात्मक पहलुओं को भी अब अंतरराष्ट्रीय राजनीति के अंतर्गत अध्ययन किया जाता है। इसके अतिरिक्त आज 'राज्यों' के अलावा अन्य कई कारक भी अब अंतरराष्ट्रीय राजनीति के विषय क्षेत्र बन गए हैं। अतः इसके अंतर्गत आज व्यक्ति, संस्था, संगठन व कई अन्य गैर-राज्य इकाइयाँ भी सम्मिलित हो गई हैं। इसका वर्तमान आधार व विषय क्षेत्र आज काफी व्यापक स्वरूप ले चुका है। इन सभी विषयों पर चर्चा से पहले अलग-अलग विद्वानों द्वारा दी गई निम्न परिभाषाओं की समीक्षा करना अति अनिवार्य हो जाता है-

कूटनीतिक इतिहास का प्रभुत्व

प्रथम विश्वयुद्ध से पूर्व इतिहास, कानून, राजनीति शास्त्र, दर्शन शास्त्र आदि के विद्वान ही अंतरराष्ट्रीय राजनीति के अलग-अलग पहलुओं पर विचार करते थे। मुख्य रूप से इतिहासकार ही इसका अध्ययन राजनयिक इतिहास तथा अन्य देशों के साथ संबंधों के इतिहास के रूप में करते थे। इसके अंतर्गत कूटनीतिज्ञों व विदेश मन्त्रियों द्वारा किए गए कार्यों का लेखा जोखा होता था। अतः इसे कूटनीतिक इतिहास की संज्ञा भी दी जाती है। ई.एच.कार के अनुसार प्रथम विश्व युद्ध से पूर्व युद्ध का संबंध केवल सैनिकों तक समझा जाता था तथा इसके समकक्ष अंतरराष्ट्रीय राजनीति का संबंध राजनयिकों तक। इसके अतिरिक्त, प्रजातांत्रिक देशों में भी परम्परागत रूप से विदेश नीति को दलगत राजनीति से अलग रखा जाता था तथा चुने हुए अंग भी अपने आपको विदेशी मन्त्रालय पर अंकुश रखने में असमर्थ महसूस करते थे। 1919 से पूर्व इस विषय के प्रति उदासीनता के कई प्रमुख कारण थे - प्रथम, इस समय तक यही समझा जाता था कि युद्ध व राज्यों में गठबंधन उसी प्रकार स्वाभाविक है जैसे गरीबी व बेरोजगारी। अतः युद्ध, विदेश नीति एवं राज्यों के मध्य परस्पर संबंधों को रोक पाना मानवीय सामर्थ्य के वश से बाहर माना जाता था। द्वितीय, प्रथम विश्व युद्ध से पूर्व युद्ध इतने भयंकर नहीं होते थे। तृतीय, संचार साधनों के अभाव में अंतरराष्ट्रीय राजनीति कुछ गिने चुने राज्यों तक ही सीमित थी।

इस प्रकार इस युग में अंतरराष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन की सबसे बड़ी कमी सामान्य हितों का विकास रहा। इस काल में केवल राजनयिक इतिहास का वर्णनात्मक अध्ययन मात्रा ही हुआ। परिणामस्वरूप, इससे न तो वर्तमान तथा न ही भावी अंतरराष्ट्रीय राजनीति को समझने में कोई मदद मिली। इस युग की मात्रा उपलब्धि 1919 में वेल्स विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन के पीठ की स्थापना रही।

सामयिक घटनाओं/समस्याओं का अध्ययन

दो विश्व युद्धों के बीच के काल में दो समानान्तर धाराओं का विकास हुआ। जिनमें से प्रथम के अंतर्गत पूर्व ऐतिहासिकता के प्रति प्रभुत्व को छोड़कर सामयिक घटनाओं/समस्याओं के अध्ययन पर अधिक बल दिया जाने लगा। इसके साथ साथ अब ऐतिहासिक राजनीतिक अध्ययन को वर्तमान राजनीतिक सन्दर्भों के साथ जोड़ कर देखने का प्रयास भी किया गया। ऐतिहासिक प्रभाव के कम होने के बाद भी अंतरराष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन हेतु एक समग्र दृष्टिकोण का अभाव अभी भी बना रहा। इस काल में वर्तमान के अध्ययन पर तो बहुत बल दिया गया, लेकिन वर्तमान एवं अतीत के पारस्परिक संबंध के महत्त्व को अभी भी पहचाना नहीं गया। इसके अतिरिक्त, न ही युद्धोत्तर राजनीतिक समस्याओं को अतीत की तुलनीय समस्याओं के साथ रखकर देखने का प्रयास ही किया गया।

शायद इसीलिए इस युग में भी दो मूलभूत कमियाँ स्पष्ट रूप से उजागर रहीं। प्रथम, पहले चरण की ही भांति इस काल में भी अंतरराष्ट्रीय राजनीति में सार्वभौमिक सिद्धान्त का विकास नहीं हो सका। द्वितीय, आज भी अंतरराष्ट्रीय राजनीति का अध्ययन अधिक सुस्पष्ट एवं तर्कसंगत नहीं बन पाया। इस प्रकार इस चरण में अंतरराष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन में बल देने की स्थिति

में बदलाव के अतिरिक्त बहुत ज्यादा परिवर्तन देखने को नहीं मिला तथा न ही इस विषय के स्पष्ट रूप से स्वतन्त्रा अनुशासन बनने की पुष्टि हुई।

राजनैतिक सुधारवाद का युग

अंतरराष्ट्रीय राजनीति के विकास का तृतीय चरण भी द्वितीय चरण के समानान्तर दो विश्व युद्धों के बीच का काल रहा। इसे सुधारवाद का युग इसलिए कहा जाता है कि इसमें राज्यों द्वारा राष्ट्र संघ की स्थापना के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय राजनीति में सुधार की कल्पना की गई। इस युग में मुख्य रूप से संस्थागत विकास किया गया। इस काल के विद्वानों, राजनयिकों, राजनेताओं व चिन्तकों का मानना था कि यदि अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं का विकास हो जाता है तो विश्व समुदाय के सम्मुख उपस्थित युद्ध व शांति की समस्याओं का समाधान सम्भव हो सकेगा। इस उद्देश्य हेतु कुछ कानूनी व नैतिक उपागमों की संरचनाएं की गई जिनके निम्न मुख्य आधार थे।

- (क) शान्ति स्थापित करना सभी राष्ट्रों का सांझा हित है, अतः राज्यों को हथियारों का प्रयोग त्याग देना चाहिए।
- (ख) अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी कानून व व्यवस्था के माध्यम से झगड़ों को निपटाया जा सकता है।
- (ग) राष्ट्र की तरह, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी, कानून के माध्यम से अनुचित शक्ति प्रयोग को प्रतिबंधित किया जा सकता है।
- (घ) राज्यों की सीमा परिवर्तन का कार्य भी कानून या बातचीत द्वारा हल किया जा सकता है।

इन्हीं आदर्शिक एवं नैतिक मूल्यों पर बल देते हुए अंतरराष्ट्रीय संगठन (राष्ट्र संघ) की परिकल्पना की गई। इसकी स्थापना के उपरान्त यह माना गया कि अब अंतरराष्ट्रीय संबंधों में राज्यों के मध्य शान्ति बनाने का संघर्ष समाप्त हो गया। नई व्यवस्था के अंतर्गत शक्ति संतुलन का कोई स्थान नहीं होगा। अब राज्य अपने विवादों का निपटारा संघ के माध्यम से करेंगे। अतः इस युग में न केवल युद्ध व शान्ति की समस्याओं का विवेचन किया, अपितु इसके दूरगामी सुधारों के बारे में भी सोचा गया। अतः अध्ययनकर्ताओं के मुख्य बिन्दु भी कानूनी समस्याओं व संगठनों के विकास के साथ-साथ इनके माध्यम से अंतरराष्ट्रीय राजनीति के स्वरूप को बदलने वाला रहा। अन्ततः इस काल में भावात्मक, कल्पनाशील व नैतिक सुधारवाद पर अधिक बल दिया गया है।

सैद्धान्तीकरण के प्रति आग्रह

इस चरण में अंतरराष्ट्रीय राजनीति में मूलभूत परिवर्तनों से न केवल इसकी विषयवस्तु व्यापक हुई बल्कि इसमें बहुत जटिलताएँ भी पैदा हो गई। शीतयुगीन काल में राजनीति के स्वरूप में परिवर्तन तथा नये राज्यों के उदय ने सम्पूर्ण अंतरराष्ट्रीय परिवेश को ही बदल दिया। परिणामस्वरूप नये उपागमों, आयामों, संस्थाओं व प्रवृत्तियों का सर्जन हुआ जिनके माध्यम से अंतरराष्ट्रीय संबंधों का अध्ययन सुनिश्चित हो गया।

पूर्व चरणों की आदर्शिक, संस्थागत, नैतिक, कानूनी एवं सुधारवादी धाराओं की असफलताओं ने नये उपागमों के विकास की ओर अग्रसर किया। यह नया उपगम था-यथार्थवाद। वैसे तो ई.एच.कार, श्वार्जनबर्जर, क्विंसी राईट, शुभां आदि लेखकों ने इस दृष्टिकोण को विकसित किया, परन्तु हेंस जे. मारगेन्थाऊ ने इसे एक सामान्य सिद्धान्त के रूप में प्रस्तुत किया। इस सिद्धान्त के अनुसार राज्य हमेशा अपने हितों की पूर्ति हेतु संघर्षरत रहते हैं। अतः अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को समझने हेतु इस शक्ति संघर्ष के विभिन्न आयामों को समझना अति आवश्यक है।

यथार्थवादी दृष्टिकोण के साथ अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के सुनिश्चित व सुस्पष्ट विकास के रूप में अंतरराष्ट्रीय संगठन (संयुक्त राष्ट्र संघ) की भी उत्पत्ति हुई। अब इस संगठन का स्वरूप मात्रा आदर्शवादी व सुधारवादी न होकर, महत्त्वपूर्ण राजनीतिक संगठन के रूप में उभर कर आया। इसके अंतर्गत मानवजाति को युद्ध की विभीषिका से बचाने के साथ-साथ राज्यों के मध्य संघर्ष के कौन-कौन से कारण हैं? विश्वशांति हेतु खतरे के कौन-कौन से कारक हैं? शांति की स्थापना कैसे हो सकती है? शस्त्रों की होड़ को कैसे रोका जा सकता है? आदि कई प्रकार के प्रश्नों का समाधान ढूंढने के प्रयास भी किए गए।

उपर्युक्त दो प्रवृत्तियों के साथ-साथ व्यवहारवाद की उत्पत्ति भी इस युग की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि रही। व्यवहारवादी दृष्टिकोण के माध्यम से "व्यवस्था सिद्धान्त" की उत्पत्ति कर अंतरराष्ट्रीय राजनीति को समझने का प्रयास किया गया। इस उपागम के अंतर्गत राज्यों के अध्ययन हेतु तीन प्रमुख कारकों का अध्ययन किया जाना ज़रूरी माना गया। ये कारक थे।

निष्कर्ष

जनसंचार, वैश्विक व्यापार और पर्यटन के मौजूदा दौर में 'सॉफ्ट पॉवर' की अवधारणा ने विश्व के विभिन्न देशों की विदेश नीति में विशिष्ट स्थान हासिल कर लिया है। अधिक-से-अधिक 'पॉवर' की तलाश में प्राचीन काल से ही युद्ध लड़े जा रहे हैं, किंतु समय के साथ 'पॉवर' के स्वरूप और मायने में परिवर्तन आया है। अब 'हार्ड पॉवर' के स्थान पर 'सॉफ्ट पॉवर' के प्रयोग को अधिक सहूलियत भरा माना जाता है। भारत अपनी बौद्धिक व सांस्कृतिक शक्ति अर्थात् 'सॉफ्ट पॉवर' का प्रयोग तब से कर रहा है, जब से राजनीतिक विशेषज्ञों ने इस अवधारणा का प्रतिपादन भी नहीं किया था। बीते कुछ समय में भारत ने अपनी 'सॉफ्ट पॉवर' के प्रयोग की रणनीति काफी व्यवस्थित की है और एक रणनीतिक उपकरण के रूप में इसका प्रयोग करने में सक्षम रहा है। ऐसे में 'सॉफ्ट पॉवर' का अध्ययन करते हुए यह जानना आवश्यक है कि इसने भारत की विदेश नीति को आकार देने में किस प्रकार की भूमिका निभाई है

संदर्भ

1. बाल्डविन डीए (2016) शक्ति और अंतर्राष्ट्रीय संबंध: एक वैचारिक दृष्टिकोण। प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस: प्रिंसटन, एनजे।
2. कैर ईएच (1939) द ट्वेंटी इयर्स क्राइसिस, 1919-1939: एन इंट्रोडक्शन टू द स्टडी ऑफ इंटरनेशनल रिलेशंस। पालग्रेव मैकमिलन: लंदन।
3. कैनेडी पीएम (1987) महान शक्तियों का उदय और पतन: 1500 से 2000 तक आर्थिक परिवर्तन और सैन्य संघर्ष। रैंडम हाउस: न्यूयॉर्क।
4. लुंडेस्टैड जी (1998) "एम्पायर" बाय इंटीग्रेशन: द यूनाइटेड स्टेट्स एंड यूरोपियन इंटीग्रेशन, 1945-1997। ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस: ऑक्सफ़ोर्ड।
5. नी जेएस जूनियर (1990) बाउंड टू लीड: द चेंजिंग नेचर ऑफ अमेरिकन पावर। बुनियादी पुस्तकें: न्यूयॉर्क।
6. नी जेएस जूनियर (2008) द पॉवर्स टू लीड। ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस: ऑक्सफ़ोर्ड।
7. नी जेएस जूनियर (2011) द फ्यूचर ऑफ पावर। सार्वजनिक मामले: न्यूयॉर्क।
8. वाल्ट्ज केएन (1979) अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का सिद्धांत। एडिसन-वेस्ले: रीडिंग, एमए।